

कालिकट के वेल्लयिल में ड्रिफ्ट जाल मात्स्यिकी की वर्तमान स्थिति

आमुख

कालिकट में सीर फिश, ट्यूना आदि गुणतायुक्त मछलियों का अवतरण ड्रिफ्ट जाल से होता है। इसलिए वाणिज्यिक दृष्टि में इस गिरावट का महत्वपूर्ण स्थान है। बाहरी इंजन की प्रस्तुति ने गहरे समुद्र से मछली पकड़ने की सहायता प्रदान की है जिस से पकड़ में सराहनीय वृद्धि हुई है।

आनायक और संभार

पुराने डगऔट कानोस के स्थान में फाइबर ग्लास से आवृत प्लास्टिक पोतों का परिचालन होता है। कर्मशक्ति भी कम कर दिया है, 3-4 लोगों के बदले दो व्यक्तियों से काम चलाता है।

प्रयास: मत्स्यन प्रयास में उतार-चढ़ाव देखा गया। 1989-90 की भारी घटती के बाद 1991-92 में नियमित बढ़ती देख गयी। अक्टूबर से जनवरी तक की अवधि में प्रयास अधिक था।

पकड़ और पकड़ प्रति एकक प्रयास

औसत 604.6 टन मछलियों का अवतरण हुआ जिसमें 47.2% ट्यूना और 35.7% सीर मछली थी। 1988-89 में ट्यूना अवतरण और कुल पकड़ अन्य सालों की तुलना में ज्यादा था। 1989-90 में अवतरण कम हो गया और 1990-91 में बढ़कर फिर घट गया।

रिपोर्टर

एम. शिवदास

सी एम एफ आर आई मिनिकोय अनुसंधान केन्द्र, मिनिकोय, लक्षद्वीप

पकड़ का प्रति एकक प्रयास वर्ष 1988-89 से 1991-92 तक कम था।

पकड़ में वातावरणीय उतार-चढ़ाव

कुल पकड़ और ट्यूना पकड़ का ऋतुकाल अक्टूबर था तो सीर मछली का ऋतुकाल नवंबर था। ड्रिफ्ट जाल की प्रमुख पकड़ ट्यूना और सीर मछली थी। नवंबर से फरवरी तक सीर मछली पकड़ में प्रमुख थी।

जाति मिश्रण: सीर मछली में *स्कोम्बरोमोरम कर्मेसन* का प्रतिनिधित्व था। ट्यूना मात्स्यिकी में छः जातियाँ उपस्थित थीं। इन में *युथिनस अफिनिस* (66%) प्रमुख था। अन्य मछलियों का प्रतिशत *ऑक्सिस थासार्ड* (28%) *थुन्नस टॉगोल* (2%) *टी. ओबीस* (2%) *एस. ओरियन्टालिस* (1.1%) और *ए. रोचेई* (0.9%) *ई. अफिनिस* और *ए. थासार्ड* हमेशा उपलब्ध थे। *ई. अफिनिस* का ऋतुकाल अप्रैल से जून और नवंबर से मार्च तक का समय था। जुलाई से अक्टूबर तक की अवधि *ए. थासार्ड* का ऋतुकाल था। दिसंबर से जनवरी तक की अवधि *टी. टॉगोल* के लिए और सितंबर *टी.ओबीस* और *एस. ओरियन्टालिस* के लिए उचित समय था।

अधिकतम टिकाऊ उत्पाद और इष्टतम प्रयास

सीर मछली का एम एस वाई और एफ एम एस वाई क्रमशः 238.1 26 टन और 11835 टन और 8262 देख गया।

अभ्युक्तियाँ

अध्ययन से व्यक्त होता है कि ड्रिफ्टजाल मात्स्यिकी पूर्णतया ट्यूना और मछली पर निर्भर है। वर्ष 1988-89 की अवधि के



अक्टूबर में पकड अधिक था जिसकेलिए प्रयुक्त प्रयास भी अन्य सालों के इसी महीने में प्रयुक्त प्रयास की तुलना में अधिक था। इसके अतिरिक्त 1988 अक्टूबर में बारिश अन्य सालों में इस महीने में प्राप्त बारीश की तुलना में कम थी। अक्टूबर में मानसून के बाद की शान्त अवस्था तीव्र प्रयास के लिए सहायक बन गया होगा।

वर्ष 1989-90 में प्रयास में देखी गयी कमी का कारण

मानसून था। 1989-90 में प्रयास बढ़ा था लेकिन पकड प्रति एकक प्रयास कम हो गया। लेकिन पकड में कमी नहीं दीख पडी।

यह देखा गया कि ट्यूना और सीर मछली का औसत पकड 1989-90 से 1991-92 तक अधिकतम वहनीय उत्पाद से कम थी। इससे व्यक्त होता है कि संपदा का विदोहन और भी किया जा सकता है।

मुख्य शब्द/Keywords

ड्रिफ्ट जाल/अपवाही जाल - drift net

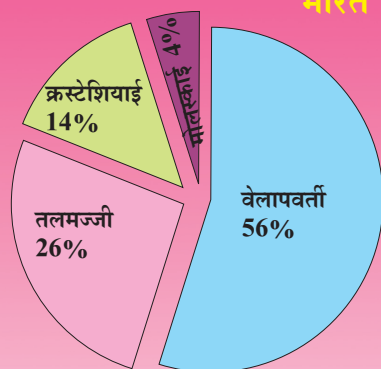
संभार/गिअर - gear

बाहरी इंजन - outboard engine

डगआउट कानोस/खात डंगी - dugout canoes



भारत की वेलापवर्ती मछली - पकड प्रवणता



भारत की कुल समुद्री पकड में आधे से अधिक भाग वेलापवर्ती मछलियों का योगदान है। पिछले वर्ष 2011 में भी इनका योगदान 56% था। भारत में सबसे अधिक पकडनेवाली मछलियाँ वेलापवर्ती संपदा के तारली सारडिनेल्ला लॉगिसेप्स और भारतीय बाँगडा रास्ट्रेलिगर कानागुर्ता है जिनके कुल मछली पकड में वर्ष 2011 का योगदान यथाक्रम 29% और 13% था।

भारत में 2011 के दौरान वेलापवर्ती मछली संपदाओं का प्रतिशत योगदान

मुख्य वेलापवर्ती संपदाएं तारली और बाँगडा के 2011 के दौरान कुल पकड में प्रतिशत योगदान



तारली - योगदान 29%



बाँगडा - योगदान 13%

